

आधुनिक समय में साहित्य का अर्थ और उसकी भूमिका

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय

सहायक आचार्य, वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महोबा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारश

साहित्य क्या है? साहित्य की परिभाषा क्या है? आज के समय में साहित्य की उपयोगिता क्या है? इन सब विषयों पर सर्वसम्मति का अभाव दिखता है। एक विद्वान की परिभाषा दूसरे विद्वान की परिभाषा के विपरीत सिद्ध होती है। यही कारण है कि विभिन्न विद्वानों के विचारों में सामांजस्य बिठाते हुए साहित्य को रेखांकित करना एक दुष्कर कार्य है। कई विचारकों का मानना है कि आज के वैज्ञानिक व तकनीकी युग में साहित्य महत्वहीन वस्तु बन कर रह गया है। इन सब विवादों के संदर्भ में मैंने साहित्य पर विचार करने और साहित्य को समझने की कोशिश की है।

मुख्य शब्द: साहित्य, लोक साहित्य, विमर्श

साहित्य के संबंध में यह एक सर्वमान्य और सर्वसम्मत मत है कि साहित्य विचारों व भावों के सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। परन्तु परिभाषा के स्तर पर सर्वसम्मति का यह दर्पण कुछ धुँधला सा जाता है। थॉमस लव पीकॉक जैसे साहित्य विरोधियों ने तो यहाँ तक घोषित कर दिया कि 'इस वैज्ञानिक व तकनीकी युग में साहित्य रचना एक आदिम कार्य है और साहित्यकार अर्धबर्बर के समान है।' प्लेटो अपने आदर्श राज्य में साहित्यकारों कवियों को जगह नहीं देता है।

साहित्य ने अपने विकास क्रम में विविध आयामों को छुआ है और इसमें अभी बहुत संभावना भी विद्यमान है इसलिए 'साहित्य क्या है?' को परिभाषित करते समय बहुत सचेत रहने की जरूरत है। यदि हम मान लें कि 'साहित्य समाज का दर्पण है' तो आज तक हाशिए के समाज की समस्याओं को वह क्यों नहीं प्रतिबिम्बित कर सका। विमर्शकारों के बीच परम्परागत साहित्य का नकार क्यों है? यदि हम यह मान लें कि साहित्य समाज का दीपक है यानि प्रेमचन्द की परिभाषा के अनुसार 'साहित्य समाज के आगे चलने वाली मशाल है' तो सवाल उठता है कि साहित्य समाज के आगे मशाल लेकर हमें किस दिशा की ओर ले जा रही थी। यदि भारत की सभ्यता संस्कृति और साहित्य इतनी ही उत्कृष्ट थी तो आज भारत की यह दशा क्यों है? यदि साहित्य शब्दों की क्रीडा है तो हमें सबसे बड़ा साहित्यकार केशव और बिहारी को ही मानना पड़ेगा। यदि साहित्य सिर्फ कल्पना है तो फिर कल्पना और तर्क का क्या संबंध है? यदि कल्पना से लिखा गया साहित्य खराब है तो फिर कल्पना और यथार्थ का क्या संबंध है? क्या कल्पना के माध्यम से लिखा गया साहित्य विचार का हिस्सा नहीं बनते? और यदि उसमें विचार है तो वह साहित्य क्यों नहीं है? हमें यह भी तय करना पड़ेगा कि क्या कल्पना निराधार होती है? यदि मनुष्य ने हवाई जहाज या उड़नपरी की कल्पना की होगी तो क्या उसके सामने उड़ती चिड़िया का बिम्ब नहीं रहा होगा?

साहित्य को परिभाषित करते समय हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि साहित्य का धर्म से, विज्ञान से व ज्ञान की अन्य शाखाओं से क्या संबंध है? धर्म और साहित्य के बीच स्पष्ट विभाजक रेखा होनी चाहिए। तुलसी के मानस और वेदव्यास रचित महाभारत से लिए गए गीता को धर्म और साहित्य दोनों रूपों में मान्यता प्राप्त है। क्या हमारी संस्कृति को सपोर्ट करने वाली रचनाएँ ही साहित्य हैं अथवा उनका विखण्डन करने वाली रचनाएँ भी साहित्य हैं। क्या केवल मुद्रित रचनाएँ ही साहित्य हैं? और यदि मुद्रित रचनाएँ ही साहित्य हैं तो जनमानस में बिखरा हुआ नृत्य और गायन को

समाहित किया हुआ लोकसाहित्य क्या है? जाहिर है कि साहित्य के संबंध में अभी ढेर सारे विवादों का शमन होना शेष है। धूमिल तो यहाँ तक कह देते हैं कि 'इस ससुरी कविता को जंगल से जनता तक ढोने से क्या होगा?'

साहित्य को परिभाषित करते हुए आज हम चाहे जो मानदंड बना लें; वह कल जरूर अप्रासांगिक हो जाएगा और होना चाहिए भी। एक समय था जब साहित्य में रामचन्द्र शुक्ल की परिभाषा से सर्वसम्मति दिखती थी लेकिन आज इसका खण्डन करने वाले ही बहुतायत हैं। "इतिहास और साहित्य के बीच एक गहरा संबंध रहा है। कभी साहित्य ने इतिहास की धारा को बदलने की कोशिश की तो कभी इतिहास ने साहित्य की। अगर हम स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास पर ध्यान दें तो कई ऐसी कोशिशें और घटनाएँ दिखायी पड़ती हैं जिनका इतिहास और साहित्य के साथ गहरा संबंध है।" जिस प्रकार से हम यह परिभाषित नहीं कर सकते कि मनुष्य क्या है? उसी प्रकार हम पूर्णतः सही तरीके से परिभाषित नहीं कर सकते कि 'साहित्य क्या है?' हम मोटे तौर पर यह बता सकते हैं कि मनुष्य को कैसा होना चाहिए? इसी प्रकार साहित्य को कैसा होना चाहिए? यही बताया जा सकता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि – "विचार' और 'कल्पना' भाषा द्वारा प्रकट किये जाते हैं। यही साहित्य है। पदार्थ साहित्य नहीं; पदार्थों का शब्द रूपी संकेत भी साहित्य नहीं और केवल शब्द भी साहित्य नहीं—'विचार' का नाम साहित्य है।" (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'साहित्य' नामक निबंध से) रामचन्द्र शुक्ल की इस परिभाषा में विचारों पर अधिक बल दिया गया है। आचार्य शुक्ल साहित्य में आये विचारों को लोकमंगल की कसौटी पर कसने के हिमायती थे।

हजारीप्रसाद द्विवेदी साहित्य का अर्थ अधिक व्यापक रूप में लेते हैं। वे कहते हैं कि साहित्य के अन्दर मुद्रित और बिना मुद्रित दोनों प्रकार के साहित्य आते हैं। 'लोक साहित्य' वह साहित्य है जो बहुत कम लिपिबद्ध हुआ है। द्विवेदी जी की दृष्टि में साहित्य हमें प्राणिमात्र के सुख-दुख को समझने के लिए सहानुभूतिमय दृष्टि देता है। साहित्य हमें मानवतापूर्ण ऐसी धरती पर ले जाता है जहाँ हम सारे विश्व के साथ आत्मीयता का अनुभव करते हैं। साहित्य हमारी जानी हुई बातों को ही नये ढंग से पेश करके हमारी संवेदना को जगाता है।

'साहित्य क्या है?' इस विषय पर अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टि से विचार किया है। बालकृष्ण भट्ट साहित्य को जनसमूह के हृदय के विकास मानते हैं। मैथ्यू अर्नाल्ड साहित्य को जीवन की आलोचना कहते हैं। मुक्तिबोध साहित्य को जीवन की

पुनर्रचना मानते हैं। साहित्य के बारे में मशहूर है – 'Literature is a kind of truth.' प्रेमचन्द साहित्य को स्वाभावतः प्रगतिशील मानते हुए भी यह स्वीकार करते हैं कि सभी साहित्यकार प्रगतिशीलता का एक ही अर्थ नहीं लेते हैं। द्विवेदी जी कहते हैं – 'जिन अवस्थाओं को एक समुदाय उन्नति समझ सकता है, दूसरा समुदाय असंदिग्ध अवनति मान सकता है। साहित्यकार समाज की यथास्थित को विचलित कर नया गढ़ना चाहता है। इसलिए वह स्वाभावतः प्रगतिशील होता है। जब भी कोई व्यक्ति एक रचना से दूसरी रचना को बड़ा बताता है तो हमें यह परिचय मिल जाता है कि वह किस सतह से बोल रहा है।

यह ठीक है कि साहित्य जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा व मकान की पूर्ति नहीं करता है किन्तु यह भी सच है कि साहित्य मनुष्य को मनुष्य होने का मतलब सिखाता है। साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं है क्योंकि वह निष्क्रिय भाव से समाज का वर्णन नहीं करता है। साहित्य समाज का दीपक भी है। वह उन पक्षों को विशेष रूप से उभारता है जो समाज के पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी हैं। वह जीवन और समाज की मूलभूत समस्याओं की पहचान कराता है। प्रसाद ने 'कामायनी' में बताया कि इच्छा, क्रिया और ज्ञान का बिखराव ही जीवन की मूल समस्या है। मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' कविता में बताया कि सारे शोषक वर्ग का गठजोड़ सबसे बड़ी चुनौती है। साहित्य को साहित्य के इतिहास के साथ जोड़कर देखने की भी आवश्यकता समझी जा रही है। हमें इस पर भी विचार करना होगा। 'इतिहास विरोधी आधुनिक साहित्य चिंतन पर विचार करने के बाद यह भी विचारणीय है कि क्या हम इतिहास और चिन्ता से मुक्त हो सकते हैं। ज्यां ब्रांट कोर्टियस ने कहा है कि इतिहास से मुक्त होने का अर्थ है—मानवता से पलायन करना और चूँकि हम मानवता से पलायन नहीं कर सकते इसलिए इतिहास से भी अलग नहीं हो सकते।'²

साहित्य स्वस्थ मनोरंजन उपलब्ध कराता है। साहित्य, संस्कृति, समाज व भाषायी विरासत का संरक्षण करता है। वैज्ञानिकता व मशीनीकरण के बढ़ते दबाव में भावनाओं को संरक्षित करने के लिए ही रुसो 'प्रकृति की ओर लौटो' का नारा देता है। साहित्य भी यही काम करता है। विज्ञान में शब्द केवल संकेत है उसमें चीजें सूचनात्मक ढंग से दूरी जाती हैं। साहित्य अधिक जीवंत विधा है। इसमें भाषा का प्रयोग सशक्ततम ढंग से होता है। साहित्य की वाक्य रचना में अलंकार, मुहावरा, देशज शब्द इत्यादि खिंचे चले आते हैं। साहित्य, भाषा, कल्पना और अनुभव के द्वारा यथार्थ के निकट जाने का प्रयास है। कोई रचना साहित्य है या नहीं; इसका निर्णय हम उसकी भाषा और शिल्प से कर सकते हैं। साहित्य उन सब बातों का निचोड़ होता है जो मनुष्य ने देखा और महसूस किया है। अगर एक वैज्ञानिक अपने विज्ञान के अनुभव को एक अच्छी भाषा और शिल्प कला के माध्यम से कहे तो एक विज्ञान की पुस्तक भी साहित्य की कोटि में आ सकती है। थॉमस अल्वा एडीसन और जेम्स वाट के प्रयोगों को हम अंग्रेजी साहित्य के अन्तर्गत पढ़ चुके हैं। जाहिर है 'साहित्य क्या है?' की जगह साहित्य के कार्यों और दायित्वों को ही बताया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. देवेन्द्र चौबे और रश्मि चौधरी का तद्भव पत्रिका में प्रकाशित 'इतिहास और कविता' नामक लेख से उद्धृत।
2. डॉ. मैनेजर पान्डेय—साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन—दरियागंज, सं० 1981, पृ० 38
3. हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी – निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, आठवां संस्करण – 2012
5. हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास – हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, छठां संस्करण – 1990